BA-(H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पार्ट-वन
पर्चा-द्वितीय

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Lnmu)

Lecture - II

सिद्ध सम्प्रदाय (बौद्धगान ओ दोहा):-

'बौद्धगान ओ दोहा' मे तीन प्रकारक रचना अछि- 1. चर्याचर्य विनिश्चय 2. दोहाकोष 3. डाकवचन। 'दोहाकोष' अपभ्रंशमे अछि किन्तु चर्याचर्य विनिश्चय जे चर्यापदक नामसँ प्रसिद्ध अछि तथा डाकवचन निर्विवाद रूपे मैथिलीक आदिकालीन साहित्य थिक। एहि तथ्यकेँ महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, डा० के० पी० जायसवाल, म०म० डा० उमेश मिश्र, डा० सुभद्र झा, पं० शिवनन्दन ठाकुर, प्रो० रमानाथ झा तथा डा० जयकान्त मिश्र, स्वीकार कयने छथि।

कोन रचना कोन भाषाक थिक, से निश्चय करबा लेल प्रधानतः दू टा तथ्यक अन्वेषण करब आवश्यक होइछ। पहिल तँ ई जे विवेच्य रचनाक रचयिता कोन ठामक छलाह। दोसर, कोनो रचनाक भाषाक शब्दावली, व्याकरण तथा शैली आदि कोन भाषासँ साम्य रखैछ।

उक्त तथ्यक आलोकमे ई निर्विवाद भऽ चुकल अछि जे चर्यापदक रचयिता मिथिलाकेँ छलाह

Ajanta
Page No.
Date

जे विदेह तथा विदेहक सन्निकट प्रान्तवासी छलाह। एहि प्रान्तक भाषाक मैथिली कहल जाइत अछि तें एकरो भाषा मैथिली थिक। निष्कर्षतः मैथिल छलाह, ते वर्णरत्नाकरो प्रमाणित करैत अछि। दोसर तथ्य अछि ध्वनि। ज्योतिरीश्वरक भाषाक ध्वनि तथा मैथिली भाषाक ध्वनिमे अत्यन्त समता छैक। मैथिलीमे अनुनासिक ध्वनि तथा 'स' क अधिकता देखल अछि। एहुमे तकर प्राचुर्य अछि।

व्याकरणोक दृष्टिएँ ई मैथिलीएक अधिकांश प्रमाणित होइत अछि। मैथिलीमे करणकारकमे तथा सम्बन्धकारकमे 'क', 'एर', 'केर', 'कार', 'अरक' प्रयोग होइत छल तथा आइयो 'केर', 'कैक' प्रयोग होइत अछि। कारकान्तमे चन्द्रबिन्दुक प्रयोग करब विभक्तिमे देखल जाइछ। एहि प्रकारक प्रयोग वर्णरत्नाकरमे देखल अछि।

ज्योतिरीश्वरमे गीतक जीवनसँ सम्बन्ध वस्तुक विशेष विवरण अछि। मिथिलामे घास अधिक अछि। पशुपालनमे एतऽ सुविधा होइछ। तें गोपजातिक एहि ठाम अधिकता अछि। एहुसँ सिद्ध होइछ जे ई वस्तु मिथिलेसँ थिक।

एकर पृष्ठमे जइ सांस्कृतिक वैशिष्ट्यक वर्णन अछि, से मिथिलांचलेक संस्कृति भऽ सकैत अछि। एकर पृष्ठमे छल गेल अछि। मिथिलाक मइ पृष्ठमे पूर्ण भऽ। ध्यान देबाक थिक जे मिथिलाके आचारमे तिहुंरत्नसँ कराओल जाइछ।

ज्योतिरीश्वरके तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितिक चित्रण करैत छथि।

खेती-गृहस्थीक विशेष महत्व, विवाहादिक महत्व ओ विधि-व्यवहार तथा दिन लगभग ओहिना छल, जेहन आइ-काल्हि अछि। लोकक जीवन सुखी छल, पशुपालनक व्यवस्था उत्तम छल।

पद्यांशमे दार्शनिक तथा धार्मिक मान्यताकेँ लौकिक रूपमे प्रस्तुत करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। दृष्टान्त रूपमे सरहपाद निम्न पद देखल जा सकैछ —

काअणा वाड़ि खाण्टि मण केडुआल
सदगुरु वअणें धर पतवाल
चीअ थिर करी धरहु रे नाइ
आन उपाये पारणे जाइ।

काव्यक दृष्टिये सेहो एकर महत्व गौण नहि अछि। एहिमे अलंकारक प्रयोग यत्र-तत्र देखबामे अबैछ। शृंगार रस, विशेषतः रतिभाव एकर अनेक पदमे दृष्टिगत होइछ। एकर पद रागमे संगीतक पूर्णता भेटैछ। एहिमे चौबीस प्रकारक राग-रागिनीक प्रयोग भेल अछि।

Samjit Kumar
05/08/20